श्री गणधर चालीसा

(आचार्यश्री विमर्शसागर कृत)

वीतराग गणपति नमूँ, दीपावलि दिन आज।
ज्ञान ज्योति से मोह का, मिट जाये साम्राज॥
दीपावलि का शुभ दिवस, चालीसा जो ध्याय।
चारों गति से छूटकर, पंचम गति को पाय॥

जय जय जय श्री गणधर देवा, सुर नर उरग करें नित सेवा।
ऋद्धि-सिद्धि सब सुख के दाता, जगत आपकी महिमा गाता॥

गण स्वामी गणपति कहलाते, गण के ईश गणेश कहाते।
नाथ! आप गणनाथ कहाते, गण धरते गणधर कहलाते॥

अष्ट ऋद्धियों के हो स्वामी, तीर्थंकर के हो अनुगामी।
अक्षर और अनक्षर भाषा, बहुजन मुख निर्गत बहुभाषा॥

श्रोतृ ऋद्धि से आप जानते, जन-जन भाषा में बखानते।
चारण गुण से गगन विचरते अणिमा आदि आठ गुण धरते॥

ऋषभदेव गणधर चौरासी, अजितनाथ नब्बे सन्यासी।
शतक एक पच है संभव विभु, एक शतक त्रय अभिनंदन प्रभु॥

सुमतिनाथ पंचम तीर्थंकर, एक शतक सोलह जिन गणधर।
शतक एक ग्यारह गण स्वामी, पद्मप्रभु के हैं जिनगामी॥

प्रभु सुपार्श्व गणधर पिचानवे, चंद्रप्रभु गणधर तिरानवे।
सुविधिनाथ गणधर अट्ठासी, प्रभु शीतल गणधर सत्तासी।

प्रभु श्रेयान्स गणनाथ सतत्तर, वासुपूज्य प्रभु छ्यासठ गणधर।
विमलनाथ जिन गणधर पचपन, अर्धशतक गणि है अनंत जिन॥

तैतालीस धर्म गणनाथा, छत्तीस शांति झुकावें माथा।
कुंथुनाथ गणधर पैंतीसा, अरहनाथ गणधर जिन तीसा॥

मल्लिनाथ अठवीस गणेशा, मुनिसुव्रत अट्ठारह ईशा।
हैं सत्रह गणपति नमिनाथा, ग्यारह नेमिनाथ गणनाथा॥

पार्श्वनाथ गणधर दस स्वामी, सन्मति ग्यारह गणधर नामी।
एक हजार चार सौ उनसठ, सब गणधर हैं भवसागर तट॥

समवसरण में अहा विराजे, द्वादश सभा आपसे साजै।
दिव्यध्वनि को आप झेलते, द्वादशांग में आप खेलते॥

सब जीवों की शंका हरते, किन्तु हृदय शंका न धरते।
मोक्षमार्ग सबको दिखलाते, चारों ही अनुयोग सुनाते॥

निश्चय से मुक्ति पथ गाया, प्रभु साधन व्यवहार बताया।
शुद्धातम का अनुभव करते, गुणस्थान में झूला करते॥

जो भवि तुम्हें हृदय से ध्याता, नाथ! आप सम ही बन जाता।
कर्मनाश विधि तुमने पाई, चेतनता चिद्रूप समाई॥

धन्य-धन्य प्रभु गौतमस्वामी, वीतरागता अति अभिरामी।
महावीर मुक्ति पद पाया, तुमने केवलज्ञान जगाया॥

मावस में भी पूनम आई, तीन लोक में खुशियाँ छाईं।
देवों ने तब उत्सव कीना, धन्य हुआ कार्तिकी महीना॥

भारत में दीपावलि आई, गुरु-शिष्य की महिमा गाई।
प्रभु ने मोक्षलक्ष्मी पाई, ज्ञानलक्ष्मी तुम प्रगटाई॥

मोक्ष-ज्ञान लक्ष्मी जो ध्याता, वो इसभव परभव सुख पाता।
दीन कोई धन लक्ष्मी ध्यावे, दुःखकारी मिथ्यात्व बढ़ावे॥

भव-भव प्रभु हम तुमकों ध्यावें, भव-भव के दुःख शीघ्र नशावें।
हो सम्यग्दर्शन सुखकारी, चरण-शरण यह विनत हमारी॥

गणधर चालीसा सदा, जो भवि पढ़े-पढ़ाय।
रोग-शोक संकट कटे, दीपावलि शुभ पाय॥
महावीर की आरती, गणधर प्रभु गुणगान।
दीपावलि को जो करे, हो 'विमर्श' वरदान॥